ISSN : 2230-8997
वर्ष : 6, अंक 20-21
अप्रैल-सितंबर 2014
(संयुक्तांक)

विशेषांक

भारत, भारतीयता और 'भारत भारती'

(भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध का त्रैमासिक)

'नव उन्नयन'

नव उन्नयन
विद्याशोधोत्थानम्

ISSN : 2230-8997

सहृदय

(भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध का त्रैमासिक)

(केंद्रीय हिंदी निदेशालय, मानव संसाधन विकास मंत्रालय के
आंशिक वित्तीय सहयोग से प्रकाशित)

भारत-भारती और भारतीयता (संयुक्तांक)

अंक-20-21

वर्ष-6 **अप्रैल-सितंबर 2014**

संपादक
डॉ. पूरनचंद टंडन

कार्यकारी संपादक
डॉ. सुनील कुमार तिवारी

'नव उन्नयन'
'संकल्प', डी – 67, शुभम् एन्क्लेव, पश्चिम विहार
नई दिल्ली – 110063

सहृदय
भाषा, साहित्य, संस्कृति, संवेदना और शोध का त्रैमासिक
भारत, भारतीयता और 'भारत-भारती' अंक : 20-21, (संयुक्तांक) अप्रैल-सितंबर, 2014

प्रकाशक
नव उन्नयन साहित्यिक सोसाइटी, नई दिल्ली

संपादक : डॉ. पूरनचंद टंडन

कार्यकारी संपादक : डॉ. सुनील कुमार तिवारी

संपादन : अवैतनिक एवं अव्यावसायिक

संपादकीय एवं ग्राहकीय संपर्क
'सहृदय', नव उन्नयन साहित्यिक सोसाइटी
'संकल्प', डी-67, शुभम् एन्क्लेव, पश्चिम विहार, नई दिल्ली-110063
चलभाष : 9810287732, 9810734820

मॉरिशस प्रतिनिधि

डॉ. राजरानी गोबिन, आले ब्रियाँ, कास्टेल, फेनिक्स, मॉरिशस, **दूरभाष :** 002307545027

सिंगापुर प्रतिनिधि
Anju Sharma, 35 Simei Rise # 07,10
Savannah Condo Park, Singapore,528781
E-mail : anjulee_03@hotmail.com, sanjeev673@hotmail.com
Phone: 006590673705

प्रकाशित रचनाओं की रीति-नीति या विचारों से 'नव उन्नयन' या संपादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। विवाद की स्थिति में न्यायक्षेत्र दिल्ली होगा।

अंक का मूल्य : 150/- रुपए

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत (वार्षिक) 225/- रुपए, **आजीवन :** 2500/- रुपए (डाक व्यय सहित)

संस्थागत : वार्षिक : 400/- रुपए, **आजीवन :** 5000/- रुपए (डाक व्यय सहित)

विदेशों के लिए

एक अंक : 5 डॉलर, **वार्षिक :** 20 डॉलर, **आजीवन :** 200 डॉलर

(सारे भुगतान मनीऑर्डर/चेक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा 'नव उन्नयन साहित्यिक सोसाइटी' के नाम से देय। दिल्ली से बाहर के चेक में 75 रुपए अधिक जोड़ें।)

टाइपसैटिंग एवं कवर डिजाइन : प्रवीण कुमार भारद्वाज
फोन : 011-22135900, 9811357243
E-mail : hemadriprakashan@gmail.com, archanaprinter2009@gmail.com

मुद्रक : विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स

आज का भारत और 'भारत-भारती' का भविष्यत् खंड / **राजाराम यादव** — 139

भारत जागरण का ओजस्वी स्वर : 'भारत-भारती' / **डॉ. जगदेव शर्मा** — 151

मूल्य विघटन और 'भारत-भारती' / **डॉ. कुलभूषण शर्मा** — 157

'भारत-भारती' का राष्ट्रीय संदेश / **रोशन लाल मीना** — 168

भारतीय अस्मिता का उद्‌घोष : 'भारत-भारती' / **रणजीत यादव** — 173

'भारत-भारती' : भारतीय अस्मिता का निहितार्थ / **डॉ. अरविंद कुमार** — 181

गुप्तजी की राष्ट्रीय चेतना और 'भारत-भारती' / **डॉ. राम किशोर यादव** — 191

'भारत-भारती' : धार्मिक और पौराणिक संदर्भ / **डॉ. सतीश शर्मा 'जाफराबादी'** — 195

राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक : मैथिलीशरण गुप्त / **डॉ. आशा** — 204

भारतीय संस्कृति का आख्यान : 'भारत-भारती' / **डॉ. अनीता भारद्वाज** — 212

'भारत-भारती' : स्वर्णिम अतीत से भविष्य तक का सफर / **डॉ. ममता चावला** — 218

'भारत-भारती' : भारतीय-संस्कृति का व्याकरण / **डॉ. राज कुमारी** — 223

'भारत-भारती' में वर्णित कविजनोचित और काव्योचित आदर्श / **डॉ. सुनील कुमार तिवारी** — 228

एक नहीं दो-दो मात्राएँ, नर से भारी नारी / **डॉ. बसंत कुमार बंसल** — 235

डॉ. ममता चावला

'भारत-भारती' : स्वर्णिम अतीत से भविष्य तक का सफर

साहित्य जगत में 'राष्ट्रकवि' मैथिलीशरण गुप्त का उन्मेष स्वाधीनता संग्राम की पृष्ठभूमि में हुआ। इस समय देश विभिन्न प्रकार की विपरीत परिस्थितियों से जूझ रहा था। पूरा राष्ट्र विदेशी शासन के अत्याचारों से त्रस्त था। प्रथम विश्वयुद्ध की आशंका सबको डरा रही थी। समाज और राष्ट्र के पतन को प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता था। ऐसे वातवरण का प्रभाव कवि के कोमल हृदय पर पड़ना स्वाभाविक ही था और उसी का परिणाम है मैथिलीशरण गुप्त कृत 'भारत-भारती'। राष्ट्र व समाज की दुर्दशा ने कवि को स्वर्णिम अतीत की ओर झाँकने के लिए विवश कर दिया, जिससे प्रेरणा पाकर वह न केवल अपने वर्तमान को सुधार सके, अपितु भविष्य के लिए भी मंगलकामना कर सके। परंतु स्वर्णिम अतीत और दयनीय वर्तमान का वैषम्य कवि को यह कहने के लिए विवश कर देता है कि –

"हम कौन थे क्या हो गए और क्या होंगे अभी।"[1]

कवि जहाँ अपने देश के अतीत के प्रति गौरव का अनुभव करता है, वहीं वह देश को पुनः गौरवशाली बनाने के लिए चिंतित भी है, पर उसे पता है कि ऐसा कर पाना तभी संभव है, जब देश को तात्कालिक समस्याओं से छुटकारा दिलाया जाए। वैसे तो 'भारत-भारती' में यत्र-तत्र अंग्रेजी राज्य की महिमा का बखान भी किया गया है, पर इस सत्य से भी इंकार नहीं किया गया है कि देश की इस दयनीय अवस्था के लिए अंग्रेजी शासन ही जिम्मेदार है। जनक्रांति की असफलता के बाद विदेशी शोषण और भी तेज हो गया था। नए-नए टैक्स, मशीन द्वारा निर्मित माल की आपूर्ति, सस्ते कच्चे माल के लिए राष्ट्र के दोहन ने, देश को आर्थिक रूप से जर्जर कर दिया था। इसके अलावा भुखमरी और अकाल भी स्थाई विपदा के सदृश देश को घेरे रहते थे, जिससे देश दिन प्रतिदिन और भी दैन्य अवस्था को प्राप्त हो रहा था। ऐसे में प्राथमिकता